परंपरा बनाम आधुनिकता

लेखक परिचय – हिन्दी साहित्य के उन्नायक – आलोचक, निबंधकार एवं उपन्यासकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म 19 अगस्त 1907 ई. में उत्तरप्रदेश के बलिया जिले के 'आरत दुबे का छपरा' (ओझोलिया) ग्राम में हुआ था। आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ज्योतिष एवं संस्कृत की उच्च शिक्षा प्राप्त की। सन् 1930 से 1950 तक शान्ति निकेतन के हिन्दी भवन में निदेशक के पद् पर आपने कार्य किया। यहीं आप गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं आचार्य क्षिति मोहन सेन के सम्पर्क में आए और साहित्य साधना में प्रवृत्त हुए। आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष भी रहे। अपनी साहित्यक सेवाओं के कारण आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार एवं पद्म भूषण अलंकरण से सम्मानित किया गया।

द्विवेदी जी का निधन 19 मई 1979 ई. को हुआ।

साहित्य का इतिहास, आलोचना, शोध एवं उपन्यास के क्षेत्र में द्विवेदी जी का उल्लेखनीय योगदान है। भारतीय संस्कृति 'अशोक के फूल', 'कुटज', 'विचार और वितर्क', 'विचार प्रवाह' आपके निबंध संकलन हैं। 'सूर साहित्य', 'कबीर', 'हिन्दी साहित्य की भूमिका', 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल', आलोचना एवं इतिहास के ग्रंथ हैं। 'वाणभट्ट की आत्मकथा', 'पुनर्नवा', 'चारुचन्द्रलेख', 'अनामदास का पोथा' प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

द्विवेदी जी का अध्ययन क्षेत्र बहुत व्यापक है। आपका संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, बंगला आदि भाषाओं पर विशेष अधिकार के साथ इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र आदि विषयों का गहरा अध्ययन भी है। आपने रचनाओं के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग किया है। द्विवेदी जी की भाषा बोधगम्य, रुचिकर एवं प्रवाहमय है। शब्द चयन एवं वाक्य-विन्यास सुगठित है। लालित्य एवं प्रांजलता भाषा की प्रमुख विशेषता है। आपने भाषा को गतिशील एवं प्रभावी बनाने के लिए लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग किया है। कहीं-कहीं संस्कृत के प्रभाव के कारण वाक्य विन्यास दीर्घ एवं भाषा क्लिष्ट हो गई है फिर भी उसमें अलंकारिकता, चित्रमयता एवं सजीवता आदि गुणों के दर्शन होते हैं।

आपकी भाषा के तीन रूप है – तत्सम प्रधान, सरल तद्भव प्रधान एवं उर्दू, अंग्रेजी युक्त व्यावहारिक। आपकी रचनाओं में चिन्तन प्रधान तर्क शैली एवं भावात्मक शैली का ओज एवं प्रवाह दिखलाई देता है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी आलोचना, समीक्षा, निबंध एवं उपन्यास के क्षेत्र में अपने सरस एवं पाण्डित्यपूर्ण योगदान से साहित्य की सेवा की है। साहित्य की अधुनातन विकास यात्रा में द्विवेदी जी का स्थान गौरवपूर्ण है।

केन्द्रीय भाव

'परंपरा बनाम आधुनिकता' विचारात्मक निबंध है। लेखक ने तार्किक दृष्टि से परंपरा और आधुनिकता की विवेचना करते हुए निष्कर्ष दिया है कि दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं और दोनों ही गतिशील प्रक्रिया की देन हैं। बुद्धिमान आदमी एक पैर से खड़ा रहता है, दूसरे से चलता है। खड़ा पैर परंपरा है और चलता पैर आधुनिकता। आधुनिकता का अपने-आप में कोई मूल्य नहीं है। परंपरा से हमें मूल्यों का रूप प्राप्त होता है। कोई भी आधुनिक विचार आसमान से नहीं पैदा होता । सबकी जड़ें परंपरा की गहराई तक होती हैं। लेखक ने अपने कथन के समर्थन में भाषा और साहित्य का उदाहरण देकर बड़े कौशल और युक्ति से स्पष्ट कर दिया कि परंपरा की बुनियाद पर ही आधुनिकता टिकी है। आधुनिकता में गतिशीलता है, आधुनिकता में बौद्धिकता का समर्थन है । परंपरा आधुनिकता को आधार प्रदान कर उसे शुष्क और नीरस बुद्धि विलास होने से बचा लेती है। निबंध विश्लेषणात्मक शैली में रचा गया है। निबंध में विचार-तत्व प्रधान है।

परंपरा बनाम आधुनिकता

ऊपर-ऊपर से ऐसा लगता है कि परंपरा, अब तक के सभी आचार-विचारों का जमाव है। सभी पुरानी बातें परंपरा कह दी जाती हैं। जब कि सत्य यह है कि परंपरा भी एक गतिशील प्रक्रिया की देन है।

हमने अपनी पिछली पीढ़ी से जो कुछ प्राप्त किया है, वह समूचे अतीत की पूंजीभूत विचार-राशि नहीं है। सदा नए परिवेश में कुछ पुरानी बातें छोड़ दी जाती हैं और नई बातें जोड़ दी जाती हैं। एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को हूबहू वही नहीं देती, जो अपनी पूर्ववर्ती पीढ़ी से प्राप्त करती है। कुछ-न-कुछ छँटता रहता है, बदलता रहता है, जुड़ता रहता है। यह निरंतर चलती रहने वाली प्रक्रिया ही परंपरा है।

'परंपरा' का शब्दार्थ है, एक दूसरे को, दूसरे से तीसरे को दिया जाने वाला क्रम। कभी-कभी गलत ढंग से इसे अतीत के सभी आचार-विचारों का बोधक मान लिया जाता है, पर परंपरा से हमें समूचा अतीत नहीं प्राप्त होता। उसका निरंतर निखरता, छँटता, बदलता रूप प्राप्त होता है। उसके आधार पर हम आगे की जीवन पद्धति को रूप देते हैं।

एक उदाहरण लें। भाषा हमें परंपरा से प्राप्त हुई है। वह वैदिक युग की भाषा नहीं है, अपभ्रंश युग की नहीं है, यहाँ तक कि वह आज से पच्चीस वर्ष पूर्व की भी नहीं है। काल-प्रवाह में बहती हुई, समकालीन संदर्भ से बिखरती हुई, अनावश्यक बातों की छँटनी करती हुई, नए उपादानों से बढ़ती और बदलती हुई वह जिस रूप में इस पीढ़ी को प्राप्त हुई है, वही आज का परंपरा-प्राप्त रूप है।

वह समूचे अतीत के शब्दों को लिए-लिए यहाँ तक नहीं पहुँची है। शब्द बदल गए हैं, ऐसे भी शब्द उसमें आ गए हैं, जो पहले नहीं थे, ऐसे बहुत से छूट गए हैं, जो पहले प्रचलित थे, ऐसे भी बहुत हैं, जो लगते तो पुराने हैं, पर जिनके अर्थ में परिवर्तन हो गया है, और तो और, वाक्य-विधान और व्याकरण में भी परिवर्तन हुए हैं। फिर भी वह अतीत से एकदम असंयुक्त भी नहीं है। वही स्थिति समस्त आचार-विचारों के क्षेत्र में है।

इस प्रकार परंपरा का अर्थ विशुद्ध अतीत नहीं है, बल्कि एक निरंतर गतिशील जीवंत प्रक्रिया है। उसमें हमें जो कुछ मिलता है, उस पर खड़े होकर आगे के लिए कदम उठाते हैं। नीति काव्य में इसी बात को इस प्रकार कहा गया है - 'चलत्येकेन् पादेन तिष्ठत्येकेन बुद्धिमान', अर्थात् बुद्धिमान आदमी एक पैर से खड़ा रहता है, दूसरे से चलता है।

यह केवल व्यक्ति-सत्य नहीं है, सामाजिक संदर्भ में भी यही सत्य है। खड़ा पैर परंपरा है, और चलता पैर आधुनिकता। दोनों का पारस्परिक संबंध खोजना बहुत कठिन नहीं, एक के बिना दूसरी की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

परंतु न तो परंपरा और न आधुनिकता ही काल वाचक शब्द रह गए हैं। ये दोनों मनोभाव-वाचक अधिक हो गए हैं - वर्तमान परिस्थिति में तो कहीं अधिक मात्रा में।

'आधुनिकता' क्या है ? शब्दार्थ पर विचार करें, तो 'अधुना' या इस समय जो कुछ है, वह आधुनिक है। पर 'आधुनिक' का यही अर्थ नहीं है। हम बराबर देखते हैं कि कुछ बातें इस समय भी ऐसी हैं, जो आधुनिक नहीं हैं, बल्कि मध्यकालीन हैं। सभी भावों के मूल में कुछ पुराने संस्कार और नए अनुभव होते हैं।

यह समझना गलत है कि किसी देश के मनुष्य सर्वदा किसी विचार या आचार को ही समान मूल्य देते आए है। पिछली शताब्दी में हमारे देशवासियों ने अपने अनेक पुराने संस्कारों को भुला दिया है और बचे संस्कारों के साथ नए अनुभवों को मिलाकर नवीन मूल्यों की कल्पना की है।

उदाहरण के लिए साहित्य को लें। आज से दो सौ वर्ष पहले के सहृदय को उस प्रकार के दुखांत नाटकों की रचना अनुचित जान पड़ती थी, जिनके कारण यवन साहित्य इतना महिमामंडित समझा जाता है और जिन्हें लिखकर

शेक्सपियर संसार के अप्रतिम नाटककार बन गए हैं। उन दिनों कर्मफल प्राप्ति की आवश्यंभाविता और पुनर्जन्म में विश्वास इतने दृढ़ भाव से बद्धमूल थे कि संसार की समंजस्य व्यवस्था में किसी असामंजस्य की बात सोचना एकदम अनुचित जान पड़ता था।

परंतु अब वह विश्वास शिथिल होता जा रहा है और मनुष्य के इसी जीवन को सुखी और सफल बनाने की अभिलाषा प्रबल हो गई है। समाज के निचले स्तर में जन्म होना अब किसी पुराने पाप का फल अतएव घृणास्पद नहीं माना जाता; बल्कि मनुष्य की विकृत समाज-व्यवस्था का परिणाम है; ऐसा माना जाने लगा है।

साहित्य के जिज्ञासु को इन परिवर्तित और परिवर्तमान मूल्यों की ठीक-ठीक जानकारी नहीं हो, तो वह बहुत-सी बातों के समझने में गलती कर सकता है; और फिर परिवर्तित और परिवर्तमान मूल्यों की ठीक-ठीक जानकारी प्राप्त करके ही हम यह सोच सकते हैं कि परिस्थितियों के दबाव से जो परिवर्तन हुए हैं, उनमें कितना अपरिहार्य है कितना अवांछनीय है और कितना ऐसा है, जिसे प्रयत्न करके वांछनीय बनाया जा सकता है।

यह गलत धारणा है कि मनुष्य कभी पीछे लौटकर हूबहू उन्हीं विचारों को अपनाएगा जो पहले थे। जो लोग मध्ययुग की भाँति सोचने की आदत को एक भयंकर वात्याचक्र की उलझन से निकलने का साधन समझते हैं, वे गलती करते हैं। इतिहास चाहे और किसी क्षेत्र में अपने को दोहरा लेता हो, विचारों के क्षेत्र में जो गया, सो गया। उसके लिए अफसोस करना बेकार है। पर इतिहास हमारी मदद अवश्य करता है। रह-रह कर प्राचीन काल के मानवीय अनुभव हमारे साहित्यकारों के चित्त को चंचल और वाणी को मुखर बनाते अवश्य हैं, पर वे व्यक्ति साहित्यकार की विशेषता के रूप में ही जी सकते हैं।

आधुनिक समाज ने निश्चित रूप से मनुष्य की महिमा स्वीकार कर ली है। अगला कदम सामूहिक मुक्ति का है- सब प्रकार के शोषणों से मुक्ति का। अगली मानवीय संस्कृति मनुष्य की समता और सामूहिक मुक्ति की भूमिका पर खड़ी होगी। इतिहास-अनुभव इसी की सिद्धि के साधन बनकर कल्याणकर और जीवनप्रद हो सकते हैं।

इस प्रकार हमारी चित्तगत उन्मुक्तता पर एक नया अंकुश और बैठ रहा है - व्यष्टि-मानव के स्थान पर समष्टि-मानव का प्राधान्य। परन्तु साथ ही उसने मनुष्य को अधिक व्यापक आदर्श और अधिक प्रभावोत्पादक उत्साह दिया है। जब-जब ऐसे बड़े आदर्श के साथ मनुष्य का योग होता है, तब-तब साहित्य नए काव्य रूपों की उद्‌भावना करता है। इस बार भी ऐसा ही हुआ।

कभी-कभी मनुष्य किसी विशेष प्रकार के आचार या विचार को ज्यों-का-त्यों सुरक्षित रखने का प्रयास करता है। कितना कर पाता है, यह विवादास्पद विषय है। मनुष्य के मन में अनेक प्रकार के मोह हैं। यह भी एक है। जब प्रयत्नपूर्वक किसी आचार या विचार को पीढ़ियों तक सुरक्षित रखने का प्रयत्न होता है, तो उसे 'संप्रदाय' कहा जाता है। संप्रदाय, परंपरा नहीं है। 'संप्रदाय' शब्द आजकल थोड़े भिन्न अर्थ में लिया जाने लगा है, पर उसका मूल अर्थ गुरु-परंपरा से प्राप्त विशुद्ध आचार-विचारों का संरक्षण ही है। इसमें प्रयत्नपूर्वक अविकृत रखने की भावना मुख्य रूप से काम करती है। परंपरा सहज है, संप्रदाय प्रयत्नसिद्ध।

आधुनिकता 'सम्प्रदाय' का विरोध करती है, क्योंकि आधुनिकता गतिशील प्रक्रिया है, 'संप्रदाय' स्थिति-संरक्षक। परंतु परम्परा से आधुनिकता का वैसा विरोध नहीं होता। दोनों की गतिशील प्रक्रियाएँ हैं। दोनों में अंतर केवल यह है कि परम्परा यात्रा के बीच पड़ा हुआ अंतिम चरण है, जबकि आधुनिकता आगे बढ़ा हुआ गतिशील कदम है।

आधुनिकता अपने आपमें कोई मूल्य नहीं है। मनुष्य के अनुभवों द्वारा जिन महनीय मूल्यों को उपलब्ध किया है, उन्हें नए संदर्भों में देखने की दृष्टि आधुनिकता है। यह एक गतिशील प्रक्रिया है। संदर्भ बदल रहे हैं, क्योंकि नई जानकारियों से नए साधन और नए उत्पादन सुलभ होते जा रहे हैं। बहुत-सी पुरानी बातें भुलाई जा रही हैं, नई सामग्रियाँ और नए कौशल नवीन संदर्भों की रचना कर रहे हैं। उनमें बहु-समादृत मानवीय मूल्यों का रूप कुछ बदला नजर आ रहा

है। परंतु फिर भी उनका शाश्वत रूप बना रहता है। परंपरा से हमें इन मूल्यों का वह रूप प्राप्त होता है, जो अतीत के संदर्भ में बना था।

कोई भी आधुनिक विचार आसमान से नहीं पैदा होता है। सबकी जड़ परंपरा में गहराई तक गई हुई है। सुंदर-से-सुंदर फूल यह दावा नहीं कर सकता कि वह पेड़ से भिन्न होने के कारण उससे एकदम अलग है। कोई भी पेड़ दावा नहीं कर सकता कि वह मिट्टी से भिन्न होने के कारण उससे एकदम अलग है। इसी प्रकार कोई भी आधुनिक विचार यह दावा नहीं कर सकता कि वह परंपरा से कटा हुआ है। कार्य-कारण के रूप में, आधार-आधेय के रूप में परंपरा की एक अविच्छेद्य शृंखला अतीत में गहराई तक-बहुत गहराई तक गई हुई है।

आधुनिकता, ज्ञान की अत्याधुनिक उपलब्धियों के आलोक के रूप ग्रहण करने का प्रयास करती है, इसीलिए बौद्धिक है। परंपरा केवल मनुष्यों के प्रयोजनों से छँटती-कटती ही नहीं है, उसकी विनोदनी और कुतूहली वृत्ति से अन्यथा रूप भी ग्रहण करके आती है। इसीलिए वह पूरी इतिहास-सम्मत नहीं होती है। कई बार शब्द उसमें नया रस भरते हैं, कई बार सामयिक विश्वास उसे नए आकार-प्रकार देते हैं। इतिहास से वह भिन्न हो जाती है और बाह्य यथार्थ के तर्कसम्मत रूप से भी अलग हो जाती है।

परंपरा इतिहास-सम्मत नहीं हो सकती, पर भूले इतिहास को खोज निकालने का सूत्र देती है। इस इतिहास से निखरी दृष्टि आधुनिकता की पहली शर्त है। जिसे इतिहास की नई दृष्टि प्राप्त नहीं है, वह हजारों वर्षों के मानवीय प्रयासों का रसास्वाद नहीं कर सकता, भविष्य के मानव-चित्र को सरस-कोमल बनाने वाले प्रयासों की कल्पना नहीं कर सकता।

जो मनुष्य, मनुष्य को उसकी सरल वासनाओं और अद्‌भुत कल्पनाओं के राज्य से वंचित करके भविष्य में उसे सुखी बनाने के सपने देखता है, वह ठूँठ तर्क परायण ही हो सकता है।

परंपरा आधुनिकता को आधार देती है, उसे शुष्क और नीरस बुद्धि-विलास बनने से बचाती है। उसके प्रयासों को अर्थ देती है, उसे असंयत और विशृंखल उन्माद से बचाती है। परंपरा और आधुनिकता ये दोनों परस्पर विरोधी नहीं, परस्पर पूरक हैं।

◆◆◆

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. परंपरा क्या है ?
2. दो शताब्दी पूर्व किस प्रकार के नाटकों की रचना अनुचित जान पड़ती थी ?
3. मनुष्य की महिमा किसे स्वीकार है ?
4. अगली मानवीय संस्कृति का स्वरूप क्या होगा ?
5. आधुनिकता को असंयत और विशृंखल होने से कौन बचाता है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. भाषा की प्राप्ति किस प्रकार होती है ?
2. नीति वाक्य में बुद्धिमान के विषय में क्या कहा गया है ?
3. साहित्य के जिज्ञासु समझने में गलती कब कर सकते हैं ?
4. चित्तगत उन्मुक्तता पर कौन सा नया अंकुश लग रहा है ?
5. आधुनिकता सम्प्रदाय का विरोध क्यों करती है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. परम्परा और आधुनिकता की तुलनात्मक व्याख्या कीजिए ।
2. पाठ के आधार पर आधुनिकता का व्यापक अर्थ समझाइए ।
3. साहित्य के क्षेत्र में इतिहास किस प्रकार मदद करता है ?
4. 'आधुनिकता अपने आप में कोई मूल्य नहीं है।' इस कथन को स्पष्ट कीजिए ।
5. विचार-विस्तार कीजिए – 'कोई भी आधुनिक विचार आसमान में नहीं पैदा होता है।'

भाषा अध्ययन -

1. निम्नलिखित शब्द समूह के लिए एक शब्द लिखिए –
   अ) निरन्तर चलने वाला–
   ब) वह समय जो बीत चुका है–
   स) नीति का बोध कराने वाला वाक्य–
   द) मन के भाव–
   इ) महिमा से परिपूर्ण–
2. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद करते हुए संधि का नाम बताइए –
   (1) मनोभाव (2) पुनर्जन्म (3) निर्बल (4) प्राग्ज्योतिष (5) अत्याधुनिक (6) महर्षि
   (7) आर्योचित (8) पुनरुद्धार
3. निम्नलिखित पदों का समास विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए –
   (1) इतिहास-सम्मत (2) बाललीला (3) कालप्रवाह (4) परम्परा-प्राप्त (5) विचार-राशि
   (6) देवकीपुत्र (7) राज्यच्युत (8) सत्ताधारी

योग्यता विस्तार

1. ''परम्परा और आधुनिकता'' इस विषय पर कक्षा में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।
2. सभ्यता और संस्कृति में अन्तर स्पष्ट करते हुए 150 शब्दों का एक लेख लिखिए ।
3. विद्यालयीन गतिविधियों पर एक आलेख तैयार कीजिए जिसमें विद्यालयीन परम्पराओं के साथ आधुनिकता का समन्वय हो।

शब्दार्थ

पूंजीभूत = एकत्र किया हुआ, एक जगह पर केन्द्रित। **पूर्ववर्ती** = पहले का। **वात्याचक्र** = भँवर। **उन्मुक्तता** = स्वतंत्रता। **अविकृत** = विकार रहित। **शृंखला** = कड़ियाँ, सांकल। **अविच्छेद्य** = विच्छेद रहित। **उन्माद** = पागलपन, सनक। **अप्रतिम**=अनुपम, बेजोड़। **बद्धमूल** = जड़ से बँधा हुआ। **घृणास्पद** = घृणा के योग्य। **अपरिहार्य** = न त्यागने योग्य, अनिवार्य। **अवांछनीय** = जिसकी चाह न की जाए। **व्यष्टि** = व्यक्ति से संबंधित। **समष्टि** = सम्पूर्ण समाज से सम्बन्धित। **असामंजस्य** = बिना ताल=मेल के, समन्वय रहित।